खतरे में हैं बंदर

नरेन्द्र देवांगन

धरती पर मानव के करीबी समझे जाने वाले बंदरों की विभिन्न प्रजातियों का अस्तित्व खात्मे की ओर बढ़ रहा है। यह चेतावनी विश्व प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) की ताज़ा रिपोर्ट में दी गई है। आईयूसीएन की ताज़ा रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में बंदरों की 634 प्रजातियों में से पचास प्रतिशत का अस्तित्व खतरे में है। एशिया में 70 फीसदी प्रजातियों को अत्यधिक खतरे की सूची में डाला गया है। यानी निकट भविष्य में उनका अस्तित्व हमेशा के लिए समाप्त हो सकता है। रिपोर्ट में बताया गया है कि बंदरों को मुख्य खतरा वनों में आग लगने, जंगलों की कटाई से नष्ट होते प्राकृतवास, भोजन की कमी और वन्य जीवों के अवैध व्यापार से है। वियतनाम और कंबोडिया में तो बंदरों की लगभग 90 फीसदी प्रजातियां अत्यधिक खतरे में हैं। यह रिपोर्ट एडिनबरा में 22वीं इंटरनेशनल प्राइमेटोलॉजिकल सम्मेलन में जारी की गई है।

भारतीय बंदर सुंदर, चतुर, चंचल और समझदार होते हैं, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि निश्चय ही बंदर मानव के विकास की सीढ़ी का एक चरण रहा होगा। बंदर, कपि तथा मनुष्य ऐसे प्राणी हैं जिनमें प्राकृतिक समानता होती है। तीनों में दोनों आंखें सामने की ओर, दांत साधारण, टांगें लंबी, अंगूठा वस्तुओं को मज़बूती से पकड़ने के लिए सामने तथा मस्तिष्क अन्य प्राणियों से अधिक विकसित होता है। अतः इन तीनों को प्राइमेट्स के उपसमूह एंथ्रोपिडी में रखा गया है।

समझा जाता है कि इन तीनों का विकास एक ही प्रकार के पूर्वजों से हुआ होगा। एक अनुमान के अनुसार इनका विकास आज से लगभग 25 लाख वर्ष पहले ओलीगोसीन तथा मायोसीन काल में लीमर्स से हुआ। लीमर्स वृक्षों पर रहते थे परंतु उनमें दोनों आंखों के बीच काफी दूरी थी। लीमर्स से विकास हुआ टर्सियर्स का। ये प्रथम स्तनधारी थे, जिनमें दोनों आंखें सामने थीं तथा जिनके बीच की दूरी कम थी। टर्सियर्स और बंदरों में इतनी समानता तो है ही कि एकदम से देखने पर दोनों को बंदर कहा जा सकता है। अतः टर्सियर्स, बंदर व कपि मानव के बीच की कड़ी हैं।

बंदर की कई प्रजातियां हैं। जैसे मैकाक (रीसस बंदर), प्रैसबाइटिस (लंगूर), पेपियो (बैबून) तथा मेन्ड्रिलस, टेल्ड मैकाक, गोल्डन लंगूर, लाल मुंह के बंदर (मैकाकस मूलेट्टा) आदि। इनमें से लाल मुंह का बंदर (मैकाकस मूलेट्टा), नीलगिरि लंगूर, लायन टेल्ड मैकाक और गोल्डन लंगूर भारत के जंगलों में भी पाए जाते हैं।

भारतीय लाल मुंह के बंदर वैज्ञानिक शोध के लिए काफी समय से काम में लाए जाते रहे हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से परमाणु परीक्षणों के लिए भारत से लाल मुंह के बंदरों का निर्यात हो रहा था। सरकारी आंकड़ों के अनुसार 1960-61निर्यातित बंदरों की संख्या सवा लाख, 1972-73 में पचास हज़ार, 1975 में तीस हज़ार तथा 1976 में बीस हज़ार थी। भारत से प्रति बंदर निर्यात की दर 400 रुपए तय थी। पर आयात करने वाली कंपनियां अमरीका में दो

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से परमाणु परीक्षणों के लिए भारत से लाल मुंह के बंदरों का निर्यात हो रहा था। परमाणु परीक्षणों के दौरान मासूम बंदरों को कई दिनों तक भूखा रखा जाता है, दौड़ाया जाता है, उल्टियां कराई जाती हैं। और आखिरकार बंदर पागल हो जाते हैं। अब निर्यात पर प्रतिबंध है।

हज़ार रुपए से चार हज़ार रुपए तक, जर्मनी में 1500 से 3500 रुपए तथा इंग्लैंड में 1700 रुपए से 3500 रुपए तक में एक बंदर बेचती थीं।

अंतर्राष्ट्रीय वन्य जीव संरक्षण प्रतिष्ठान ने यह शिकायत की कि अमरीका का वाल्टर रोड मिलिट्री हॉस्पिटल औषधि अनुसंधान के नाम पर मंगाए गए भारतीय बंदरों का उपयोग, औषधि अनुसंधानों में न करके, परमाणु विस्फोट परीक्षण के लिए सैनिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं में करता है। इन परमाणु परीक्षणों के दौरान मासूम बंदरों को कई दिनों तक भूखा रखा जाता है, दौड़ाया जाता है, उल्टियां कराई जाती हैं। और आखिरकार बंदर पागल हो जाते हैं। इस तरह से बंदरों का कत्लेआम किया जाता है।

अमरीका में न्यूट्रॉन बम का प्रथम परीक्षण भी इन्हीं मासूम तथा बेगुनाह बंदरों पर किया गया था। इसके अलावा अन्य प्रकार के वैज्ञानिक शोध इन्हीं मासूम बंदरों पर किए जाते हैं। जैसे विभिन्न शारीरिक क्रियाओं पर मस्तिष्क के विभिन्न भागों का प्रभाव, हृदय शल्य चिकित्सा, शरीर की त्वचा पर आग के प्रभाव और कार की दुर्घटना के दौरान क्षतिग्रस्त अंगों का पता लगाना और ट्रेंक्विलाइज़र्स के प्रभाव ज्ञात करना आदि। यही नहीं आरएच फैक्टर का ज्ञान और पोलियो का टीका इन्हीं बंदरों के रक्त पर हुए शोध का परिणाम हैं।

धार्मिक, मानवीय तथा राजनैतिक कारणों को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने बंदरों के निर्यात पर अप्रैल 1978 से प्रतिबंध लगा दिया है। इस पर आयात करने वाले देशों ने अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त कीं। अमरीकी सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी डॉ. एलिसबर्ग ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था कि भारत सरकार धार्मिक और दकियानूस लोगों की मांगों पर विचार करते हुए कुछ ज्यादा ही भावुक हो गई।

निर्यात पर प्रतिबंध लग जाने से स्वदेशी व विदेशी फर्मों का धंधा ही चौपट हो गया। आयात करने वाले देशों में वैज्ञानिक परीक्षण, अनुसंधान तथा चिकित्सा विज्ञान के सैकड़ों प्रयोग ठप हो गए। नई प्रकार की औषधियों की खोज में रुकावटें पैदा हो गईं। अतः भारतीय बंदरों का विकल्प अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया। अमरीका की एक फर्म ने भारतीय बंदरों के विकल्प के रूप में वहां के स्थानीय बंदर की एक नस्ल का उपयोग करना चाहा लेकिन परीक्षण असफल रहे। मानव कल्याण की आड़ लेकर कुछ विदेशी कंपनियां अभी भी ऐसे अवसर की खोज में हैं कि किसी प्रकार से भारतीय बंदरों का निर्यात खुले। कहा जाता है कि गैर कानूनी तरीकों से लुकछिप कर आज भी भारतीय बंदर निर्यात किए जा रहे हैं।

मानव अपने स्वार्थ के लिए इन वन्य प्राणियों का हनन कर रहा है, कत्लेआम कर रहा है और वन की शोभा को नष्ट कर रहा है। अब बंदर भी शेर, भेड़िया, बारहसिंघा तथा अन्य वन्य प्राणियों की तरह विलुप्तप्राय जीव-जंतुओं की श्रेणी में आ गए हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता

सिर्फ 150 रुपए

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल

के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से

ई-10,शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

के पते पर भेजें।